



चलभैरेमटकेटम्माकटम्



चम मेरे मटके लम्बकटम

छोटे बच्चों के लिए कहानी
की
सहायक पुस्तक

लेखक

लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज सम.सं.

राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर

प्रकाशक-राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, मोतिया पार्क, भोपाल

चित्रकार-श्री विजय चक्रवर्ती

मूल्य- पंद्रह रुपये

कापीराइट : प्रकाशकाधीन

संस्करण- 1995

मुद्रक-भार्गव प्रेस, १ ए, बाई का बाग, इलाहाबाद

चल मेरे मटके टम्मकुटम्

प्राथमिक-कक्षा के छात्रों के लिये सहायक वाचन की पुस्तक !

लेखक : श्री एल० पी० भारद्वाज एम० ए० साहित्यरत्न

प्रथम राष्ट्रीय श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार विजेता !

यह पुस्तक ६-७ वर्ष के उन छात्रों (बालकों) के लिये लिखी गई है जो प्रवेशिका समाप्त करके पहली या दूसरी बेसिक रीडर पढ़ रहे हैं। इससे अधिक आयु के विद्यार्थियों के सहायक वाचन (Supplementary reading) के लिये अनेक पुस्तकें हैं, पर ऐसी एक मात्र पुस्तक यही है, जो पहली एवं दूसरी कक्षा के अल्पायु वाले बालकों के लिये विशेष रूप से तैयार कराई गई है।

अन्य विशेषताएँ—

- १—पुस्तक एक अत्यन्त लोक-प्रिय बुढ़िया की सुरुचि पूर्ण कहानी पर आधारित है, जिसे एक बार हाथ में लेकर बिना समाप्त किये बच्चा छोड़ नहीं सकता।
- २—अत्यन्त छोटे-छोटे वाक्य जिन्हें सुगमता से बच्चे पढ़ सकें।
- ३—पुस्तक अन्य पुस्तकों की भाँति प्रेस के साधारण टाइप में नहीं छापी गई है, वरन् विशेष रूप से एक-एक अक्षर कलाकार से बच्चों के लिये सुरुचि पूर्ण लेख में लिखवा कर (ब्लॉक द्वारा) प्रकाशित कराई गई है।
- ४—इस पुस्तक में छोटे बच्चों को सिखाने की आधुनिकतम शैली, शब्दों अथवा वाक्यों की पुनरावृत्ति (frequency) पद्धति का प्रयोग किया गया है।
- ५—लकड़ी के रंगीन खिलौनों के सुन्दर डिजाइन और बच्चों के मनमोहक चित्रों की भरमार के साथ पुस्तक छापी गई है।

आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी जगत में आदर प्राप्त करेगी।

प्रकाशक



एक बुढ़िया थी ।
बुढ़िया साठ बरस की थी ।
बुढ़िया गरीब थी ।

बुढ़िया अकेले रहती थी ।
सब काम खुद करती थी ।
काम करते करते थक जाती थी ।





उसका एक बेटा था ।
उसका नाम मोहन था ।
मोहन दूसरे गाँव में रहता था ।
मोहन का गाँव बहुत दूर था ।

एक दिन बुढ़िया ने सोचा ।
मैं बूढ़ी हूँ ।
काम करते करते थक जाती हूँ ।
चलूँ अपने बेटे के पास चलूँ ।
उसके पास चार दिन रहूँगी ।
कुछ आराम मिलेगा ।





बुढ़िया का बेटा दूर गाँव में रहता था।
रास्ते में नदी पड़ती थी।
रास्ते में जंगल पड़ता था।
रास्ते में पहाड़ पड़ते थे।
रास्ते में जंगली जानवर मिलते थे।

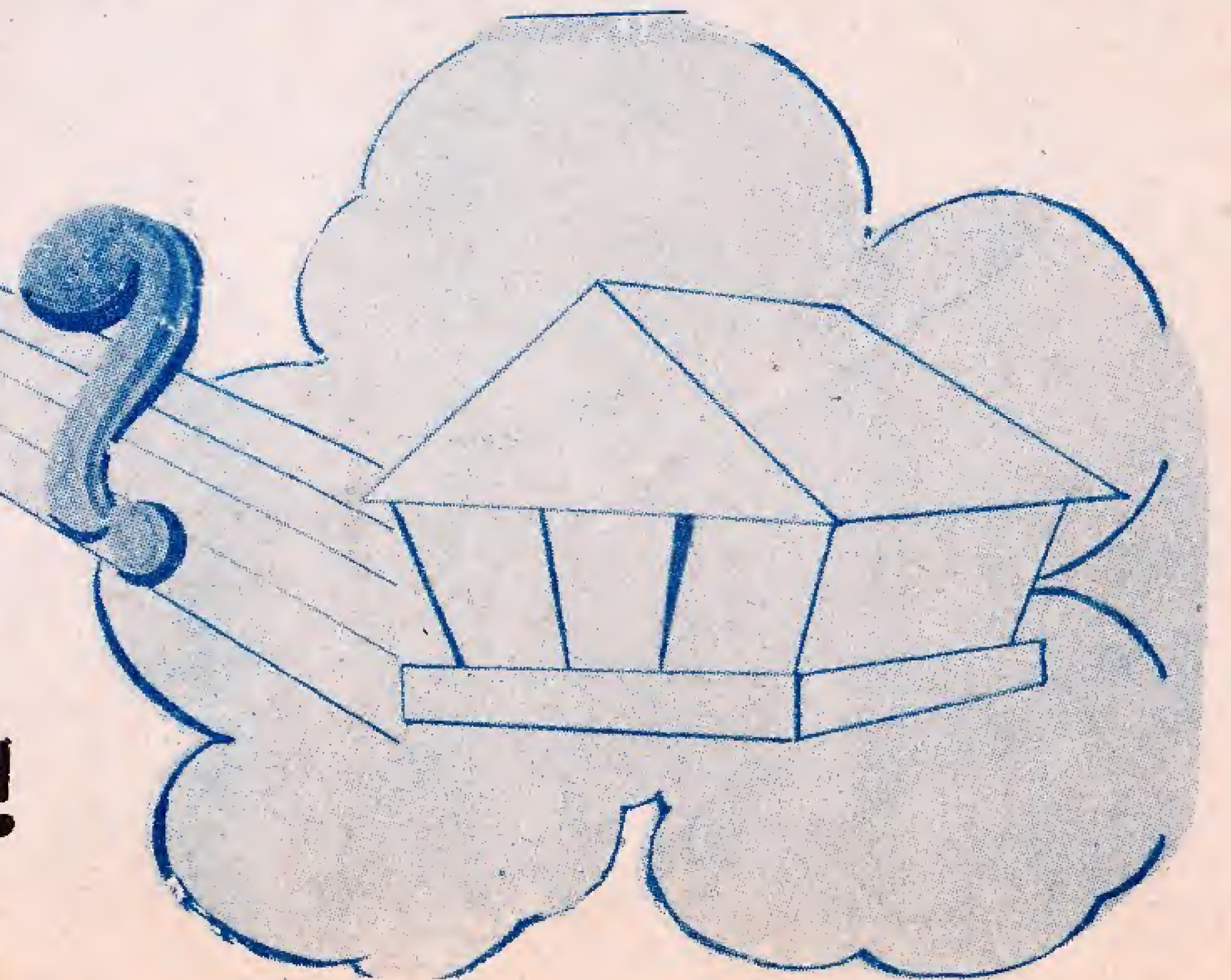
बुढ़िया ने सोचा।
क्या करूँ।
बेटे के घर कैसे जाऊँ।





बुढ़िया के पास घोड़ा न था।
बुढ़िया के पास हाथी न था।
बुढ़िया के पास ऊँट न था।
बुढ़िया के पास खच्चर न था।

बेटे के घर जाय तो कैसे जाय !

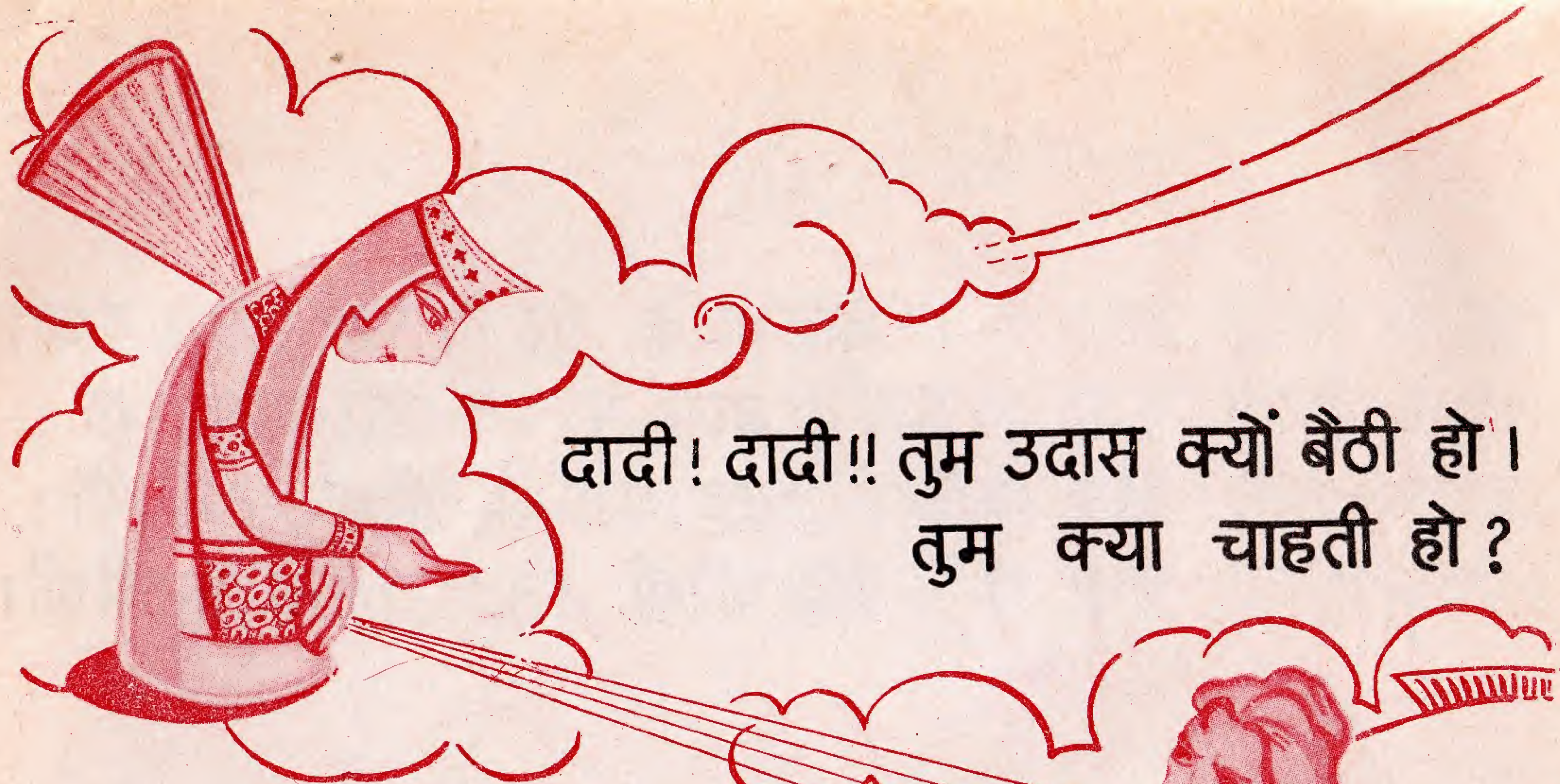




बुढ़िया के घर के पास एक बाग़ था।
बाग़ में एक परी रहती थी।
वह परी परियों की रानी थी।
सब परियाँ उसका कहना मानती थीं।

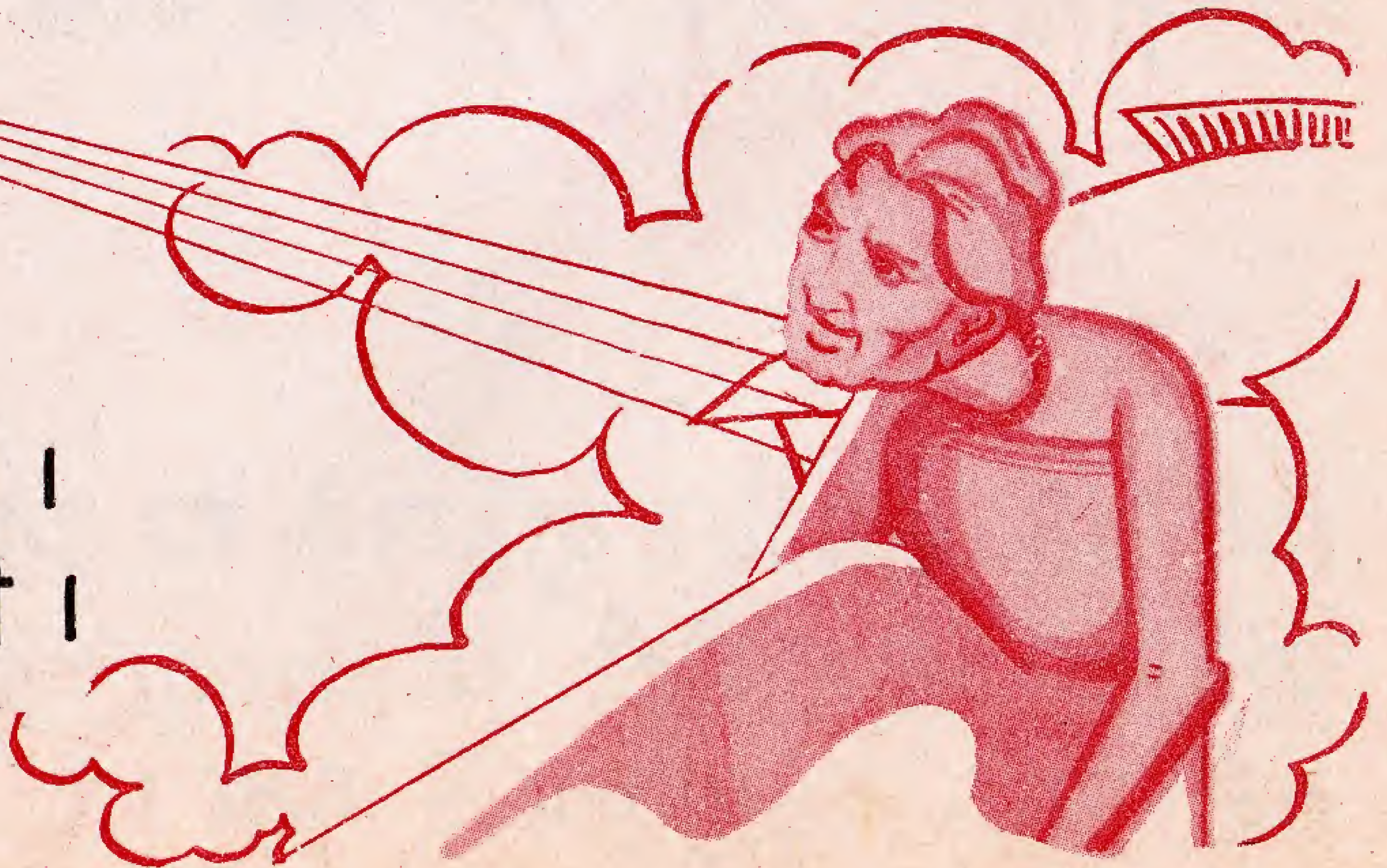
रानी-परी एक दिन बुढ़िया के घर आई।
बुढ़िया उदास बैठी थी।
रानी-परी ने बुढ़िया से पूछा।





दादी! दादी!! तुम उदास क्यों बैठी हो।
तुम क्या चाहती हो?

मुझे बताओ।
मैं तुम्हें ला कर दूंगी।
मैं तुम्हारी बात सुनूंगी।





बुढ़िया बोली ।
रानी तुम कितनी अच्छी हो ।
तुम कितनी सीधी हो ।
तुम्हें अपनी बात जरूर बताऊँगी ।

मैं बुढ़िया हूँ ।
मैं कमजोर हूँ ।
काम करते करते थक जाती हूँ ।
मेरा बेटा मोहन है ।





मोहन दूर गाँव में रहता है ।
मैं उसके पास जाना चाहती हूँ ।

कैसे जाऊँ ।
मैं अकेली हूँ ।
मैं गरीब हूँ ।
मेरी मदद करने वाला कोई नहीं ।





मेरे पास कोई घोड़ा नहीं ।
मेरे पास कोई हाथी नहीं ।
मेरे पास कोई ऊँट नहीं ।
मेरे पास कोई खच्चर नहीं ।

मेरे पास कोई गधा नहीं ।
बिना सवारी कैसे जाऊँ ।
मेरी मदद करने वाला कोई नहीं ।





मोहन का गाँव दूर है ।
रास्ते में जंगल पड़ता है ।

रास्ते में नदी पड़ती है ।
रास्ते में पहाड़ पड़ते हैं ।



कैसे जाऊँगी ?
कैसे उसके पास पहुँचूँगी ?



रास्ते में भेड़िये मिलेंगे ।
रास्ते में शेर मिलेंगे ।

रास्ते में साँप मिलेंगे ।
रास्ते में भालू मिलेंगे ।





परी बोली ।
दादी तुम घबराओ नहीं ।
मैं तुम्हारी मदद करूँगी ।
मैं तुम्हें एक मटका दूँगी ।
वह मटका बड़ा होगा ।

वह मटका गोल होगा ।
वह मटका चिकना होगा ।
वह मटका मजबूत होगा ।
वह मटका जादूका होगा ।



वह अपने आप चलेगा ।

बस इतना कहना ।
'चल मेरे मटके टम्मक टम ।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम ।'

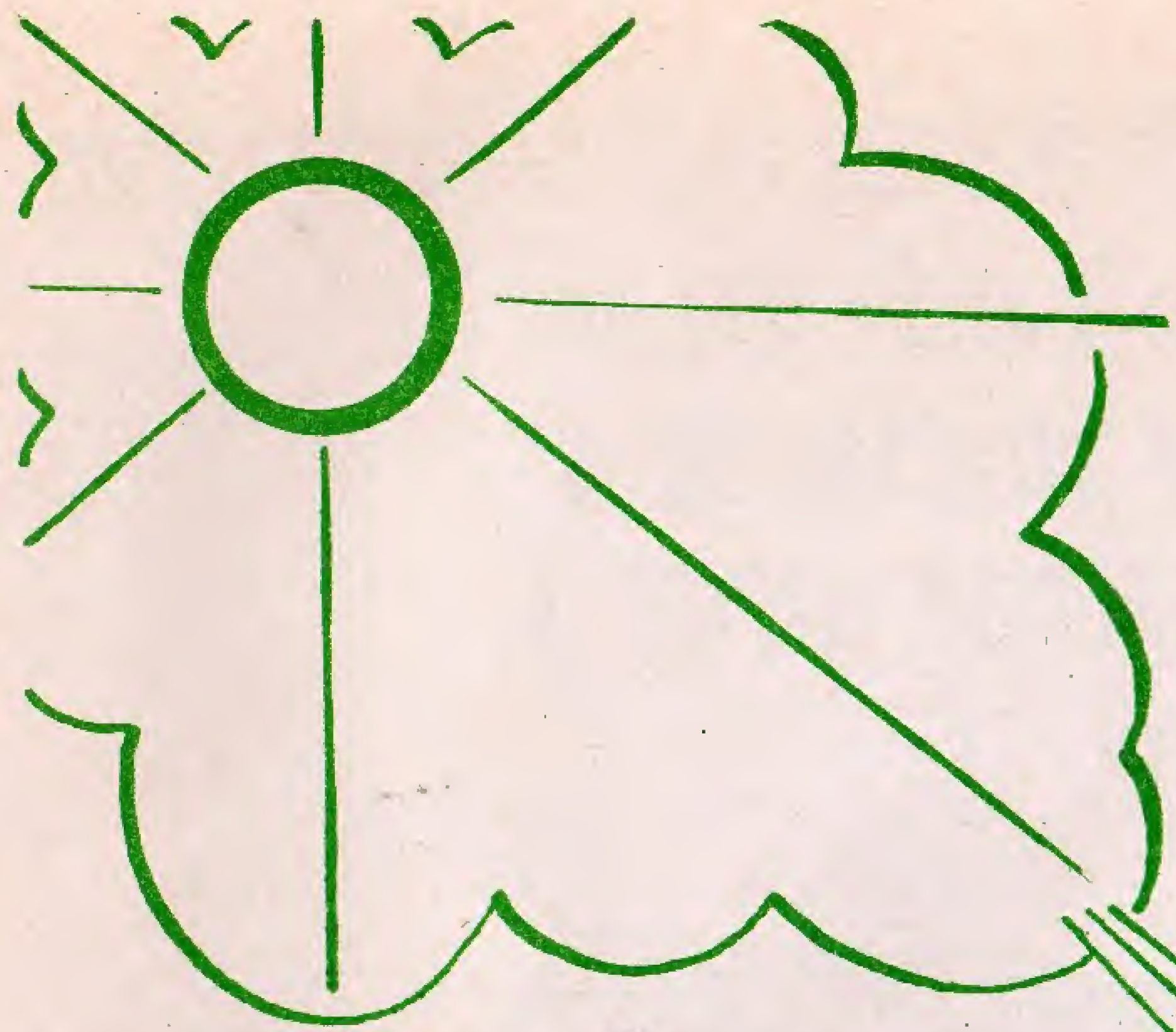




बुढ़िया ने कहा-बहुत अच्छा
बुढ़िया ने परी की बात मान ली

परी ने मटका ला दिया ।
बुढ़िया खुश हुई ।
मटका ले लिया ।
वह मटके में बैठ गई ।





एक डंडा अपने हाथ में ले लिया ।
बुढ़िया सुबह सवेरे चली ।
मटके में बैठ कर बोली ।
चल मेरे मटके टम्मक् टम् ।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम ।

मटका जरा हिला ।
फिर सरका ।
फिर जोर से चला ।
बुढ़िया मटके में बैठी थी ।
वह भी चली ।
मटका भी जा रहा था ।
बुढ़िया भी जा रही थी ।



चलते चलते मटका नदी किनारे पहुँचा
मटके ने नदी पार की ।
पहाड़ पार किया ।
फिर जंगल आया ।

बुढ़िया भी जंगल में आ गई ।
जंगल में एक भेड़िया मिला ।
भेड़िया बुढ़िया के पास आया ।
उसने बुढ़िया से पूछा ।
बुढ़िया बुढ़िया कहाँ चली ।





बुढ़िया बोली ।
मैं अपने बेटे के घर जा रही हूँ ।
भेड़िया बोला ।
बुढ़िया बुढ़िया ठहर ।
मैं भूखा हूँ ।
मैं तुम्हें खाऊँगा ।

बुढ़िया ने मटका रोका ।
वह बोली ।
मैं अपने बेटे के घर जा रही हूँ ।
तुम मुझे नहीं खा सकते हो ।
बुढ़िया ने डंडे से इशारा किया ।
मटके से कहा ।

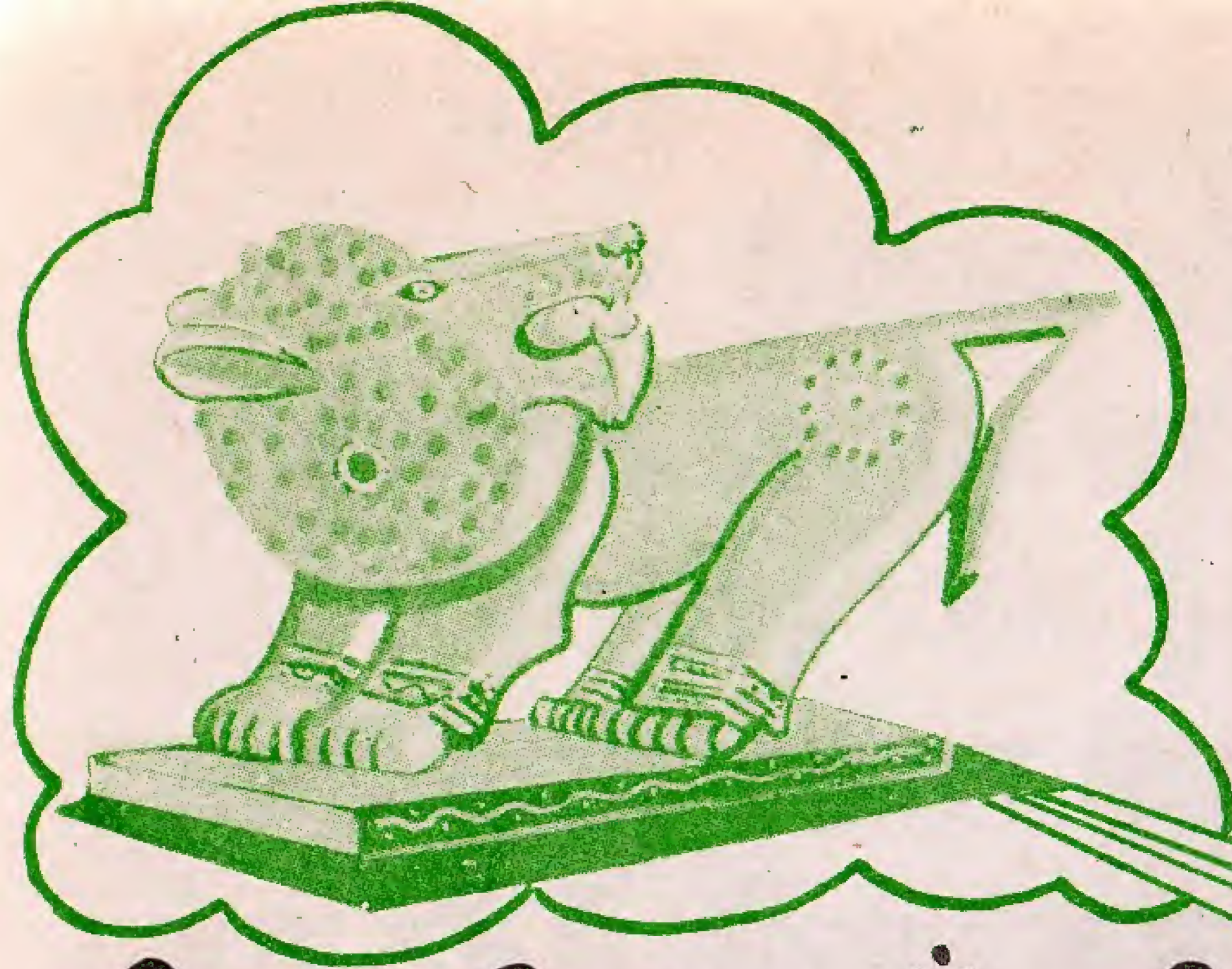




चल मेरे मटके टम्मक् टम् ।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम ।
यह सुनते ही मटका चल दिया ।
भेड़िया मटके के पीछे पीछे दौड़ा ।
वह दौड़ते दौड़ते थक गया ।
मटका उसके हाथ नहीं आया ।

भेड़िया अपना सा मुँह लेकर रह गया ।
एक ओर जाकर चुपके से बैठ गया ।
बुढ़िया की जान बची ।
भेड़िया से पीछा छूटा ।






चलते चलते एक शेर मिला ।
शेर कई दिन का भूखा था ।
भूख के मारे उदास बैठा था ।
उसने बुढ़िया को देखा ।
उसने बुढ़िया से पूछा —

बुढ़िया बुढ़िया कहाँ चली ?
बुढ़िया — बोली ।
मैं अपने बेटे के घर जा रही हूँ ।
शेर बोला —
बुढ़िया बुढ़िया ठहर ।
मैं बहुत भूखा हूँ ।
मैं तुम्हें खाऊँगा ।

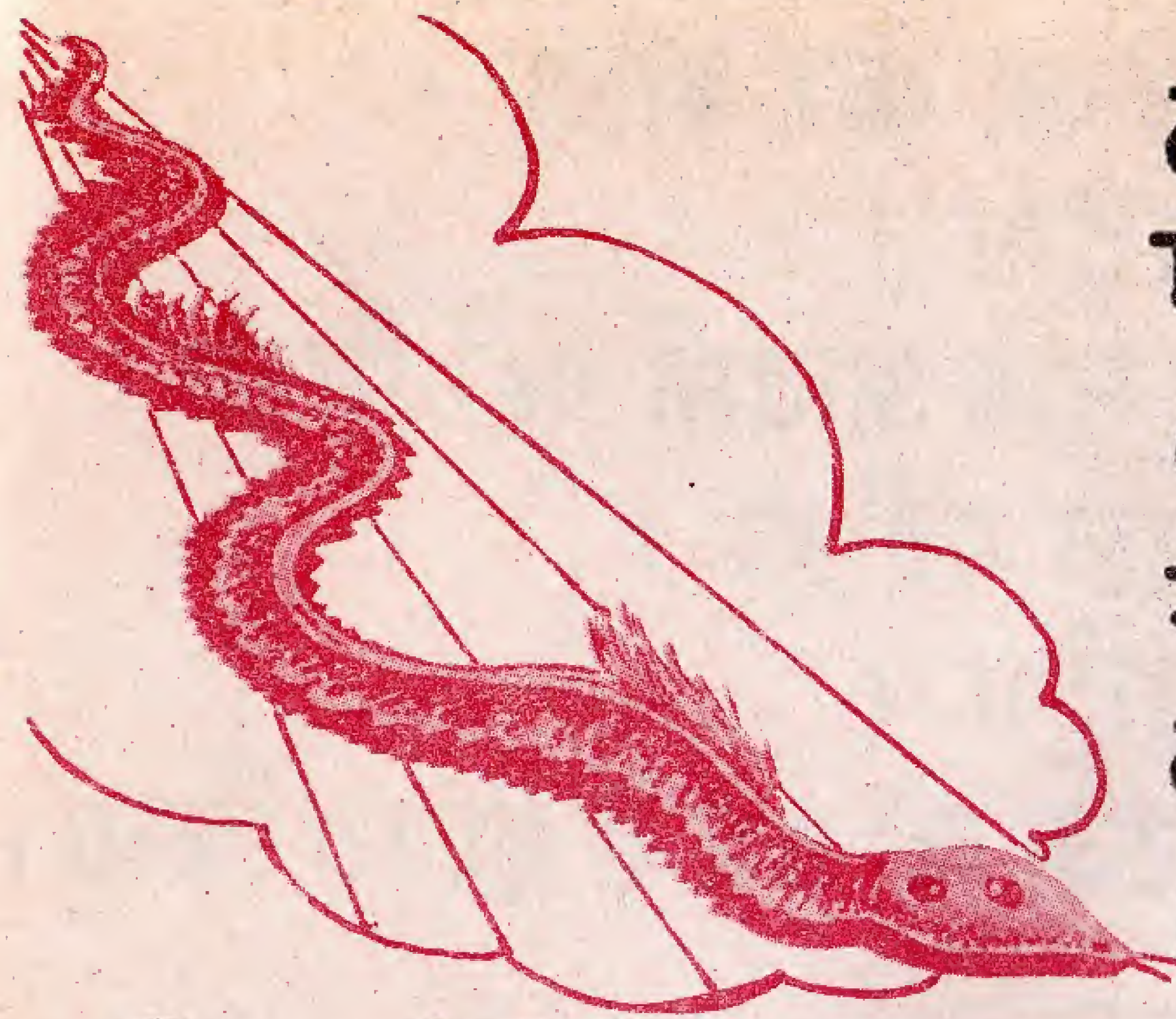




मुझे कई दिनों से कोई शिकार नहीं मिला।
मेरा पेट खाली है।
तुम्हें खा कर भर जायगा।
मैं तुम्हें जरूर खाऊंगा।
बुढ़िया ने जरा देर मटका रोका।
वह तन कर मटके में बैठ गई।

डंडे से मटके को इशारा किया।
मटके से बोली —
चल मेरे मटके टम्मक्टम्।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम।
यह सुनते ही मटका चल दिया।
शेर मटके के पीछे दौड़ा।
दौड़ते दौड़ते थक गया।





वह अपना सा मुँह लेकर रह गया ।
एक झाड़ी में जाकर बैठ गया ।
बुढ़िया कुछ दूर और चली ।
रास्ते में एक साँप मिला ।
वह साँप काला काला था ।
वह फन फैलाये बैठा था ।

बुढ़िया को देख कर फुँकार मारने लगा ।
उसने बुढ़िया से पूछा ।
बुढ़िया बुढ़िया कहाँ चली ।
बुढ़िया बोली —
मैं अपने बेटे के पास जा रही हूँ ।
मेरे बेटे का घर दूर है ।
मैं उससे मिलने जा रही हूँ ।





साँप फन फैला कर बोला ।
मैं तुम्हें काटूंगा ।
कई दिन से मुझे आदमी नहीं मिला ।
अब तुम मिल गई हो ।
मैं तुम्हें काटूंगा ।
बुढ़िया ने मटके को डंडे से इशारा किया ।
वह बोली —

चल मेरे मटके टम्मकटम् ।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम ।
मटका चल दिया ।
बुढ़िया ने साँप से कहा ।
तुम मुझे काट नहीं सकते ।
मैं अपने बेटे के घर जा रही हूँ ।
साँप दौड़ा ।

मटका भी दौड़ा ।





साँप हार कर पीछे रह गया ।
बुढ़िया मटके में बैठी चली गई ।
चलते-चलते बुढ़िया को एक झाड़ी मिली
झाड़ी में से एक चीता निकला ।
वह चीता बहुत बड़ा न था ।
वह बहुत डरावना था ।

वह कई दिन का भूखा था ।
भूख के मारे उदास बैठा था ।
बुढ़िया से पूछा —
बुढ़िया, बुढ़िया कहाँ चली ।
बुढ़िया बोली —
मैं अपने बेटे के घर जा रही हूँ ।





मेरे बेटे का घर दूर है ।
चीता बोला —
बुढ़िया बुढ़िया ठहरो ।
मैं तुम्हें खाऊँगा ।
मैं भूखा हूँ ।
मुझे कोई शिकार नहीं मिला ।

मुझे कोई जानवर नहीं मिला ।
मुझे कोई आदमी नहीं मिला ।
मैं कई दिन का भूखा हूँ ।
मेरा पेट खाली है ।
तुम्हें खाकर भर जायगा ।





बुढ़िया ने कहा ।
तुम मुझे नहीं खा सकते ।
उसने मटके को डंडे से इशारा किया ।
और कहा —
चल मेरे मटके टम्मकटम् ।
कहां की बुढ़िया कहां के तुम ।

मटका चल दिया ।
वह तेजी से भागता चला गया ।
चलते चलते वह दूर निकल गया
चलते चलते वह बुढ़िया के बेटे के
बुढ़िया ने अपने बेटे को देखा ।

बेटे ने अपनी मां के पैर छुए ।
उसने हाथ जोड़ कर कहा — अम्माँ राम-राम ।





बुढ़िया ने बेटे को गले लगाया ।
उसने बेटे का मुँह चूमा ।
बुढ़िया खुश हुई ।
बेटा खुश हुआ ।
बुढ़िया बहुत दिनों तक बेटे के घर रही ।
बेटे ने बुढ़िया को अच्छे अच्छे
खाने खिलाये ।

बुढ़िया ने बेटे को अच्छी अच्छी बातें सुनाई ।
मां - बेटे दोनों कई दिन तक रहे ।
एक दिन बुढ़िया अपने बेटे से बोली ।
बेटा - बेटा मैं अब घर जाऊँगी ।
तेरे घर रहते रहते कई दिन हो गये ।





बेटा बोला —
अम्मां - अम्मां अभी न जाओ ।
अभी कुछ दिन और ठहरो ।
बुढ़िया बोली —
बेटा अब मुझे जाने दो ।
तेरे पास बहुत दिन रह चुकी ।

अब घर जाने को जी चाहता है ।
बेटा राजी हो गया ।
दूसरे दिन बुढ़िया अपने घर जाने को
तैयार हुई ।
उसने कपड़े पहिने । अपना डंडा लिया

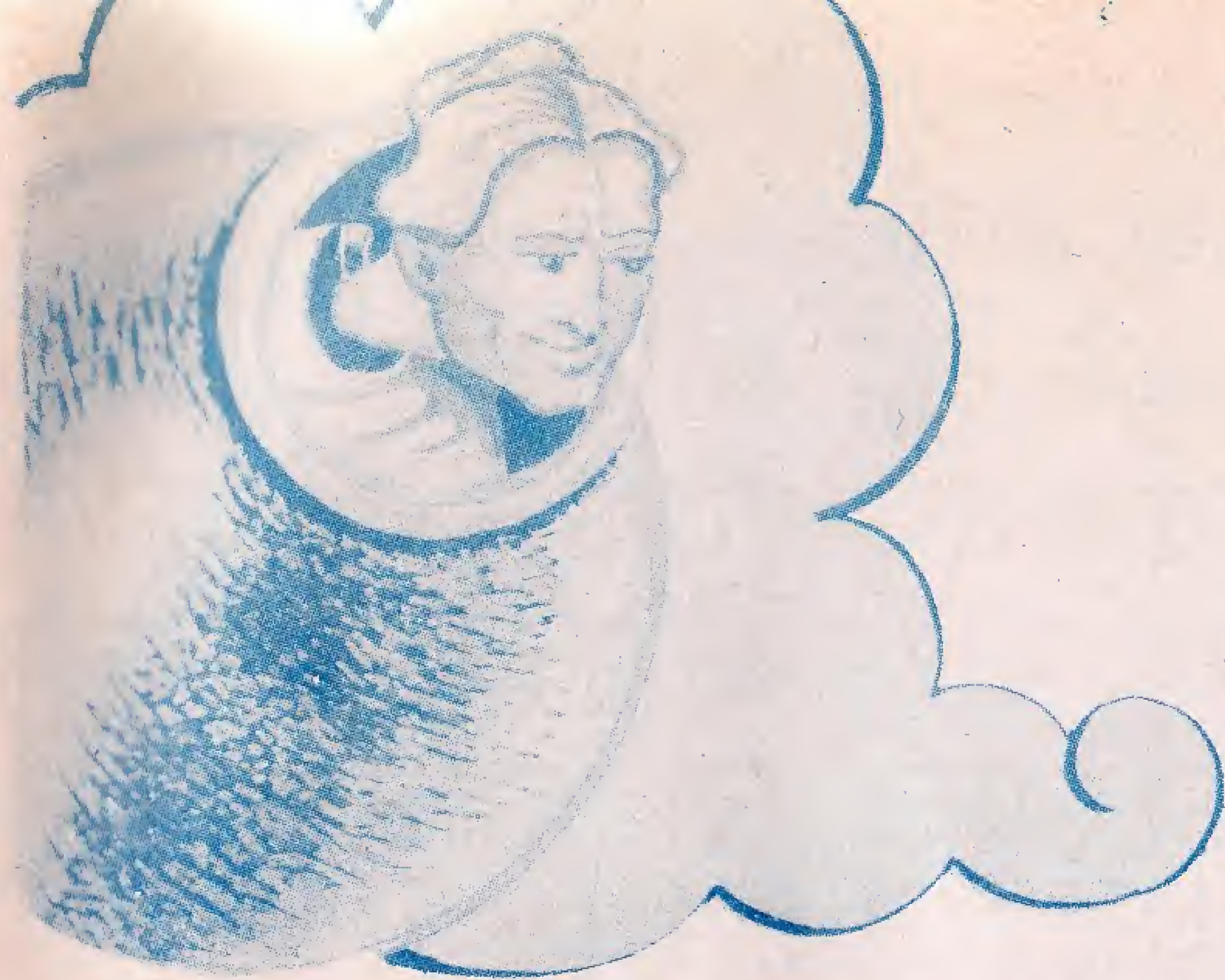




वह अपने मटके में बैठी ।
मटके में बैठ कर बोली ।
चल मेरे मटके टम्मक टम् ।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम ।
मटका भट चल पड़ा ।

चलते-चलते नदी किनारे पहुँची ।
बुढ़िया ने थोड़ा रेत लिया ।
रेता एक थैले में भरा
रेता सूरवा था ।
रेता चमकीला था ।
मटका तेज जा रहा था ।
वह जंगल के पास पहुँचा





उसे एक चीता मिला।
वह चीता भूखा था।
उसने बुढ़ियाँ को देखा।
वह बुढ़िया से बोला —
बुढ़िया-बुढ़िया कहाँ चली।
बुढ़िया-बुढ़िया ठहर।

बुढ़िया - बुढ़िया रुक जा।
बुढ़िया - बुढ़िया मेरी बात सुन।
बुढ़िया बोली —
अपने घर जा रही हूँ।
फिर चीता बोला —
बुढ़िया - बुढ़िया ठहर।
मैं तुम्हें खाऊँगा।





बुढ़िया बोली —
तुम मुझे नहीं खा सकते ।
यह कह कर बुढ़िया ने चीते की
आंखों पर रेत की एक मुट्ठी फेंकी ।
चीता आंखें मलते रह गया ।
बुढ़िया ने डंडा लिया ।

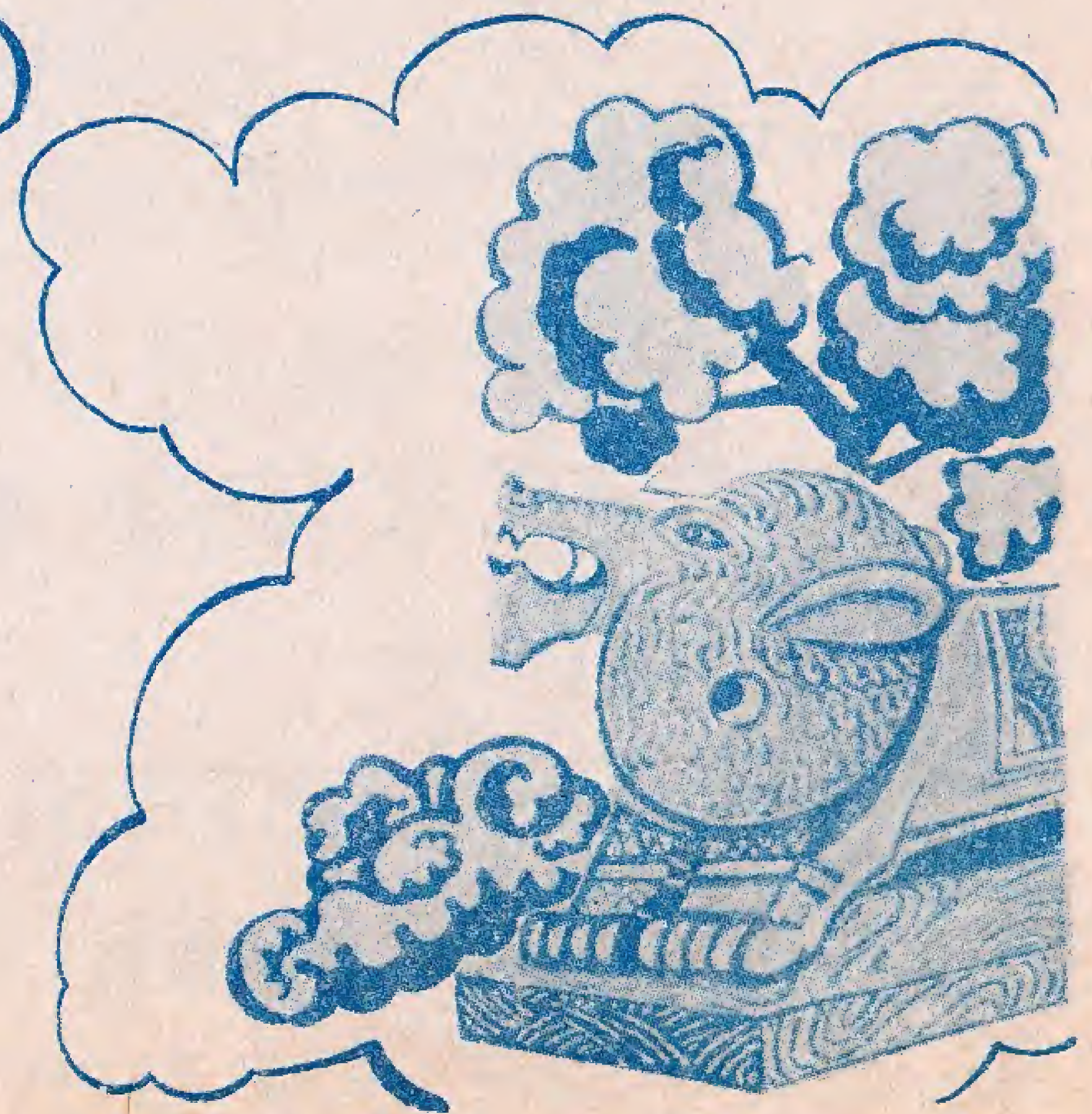
मटके को इशारा किया ।
चल मेरे मटके टम्मकटम् ।
कहां की बुढ़िया कहां के तुम ।
मटका तेजी से चल पड़ा ।





मटका जंगल में चला ।
मटका खेतों में चला ।
मटका पहाड़ों में चला ।
मटका मैदानों में चला ।
चलते-चलते
वह एक भाड़ी के पास पहुँचा ।

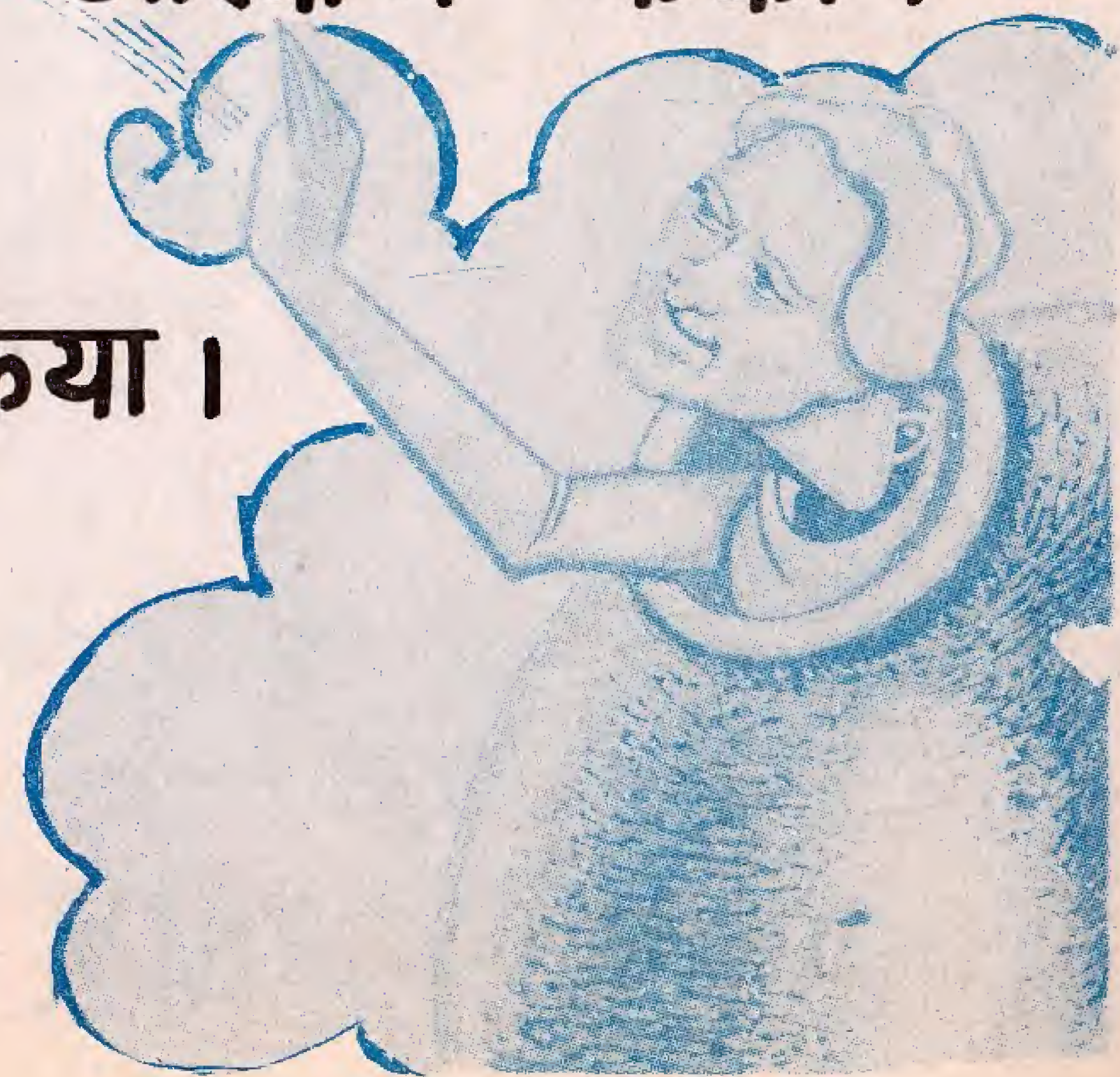
उस भाड़ी में एक शेर रहता था ।
वह शेर कई दिनों का भूखा था ।
शेर ने बुढ़िया को देखा ।
उसने बुढ़िया से पूछा ।
बुढ़िया बुढ़िया कहाँ चली ।
बुढ़िया बोली —
अपने घर जा रही हूँ ।





शेर बोला —
मैं भूखा हूँ !
मैं तुम्हें खाऊंगा ।
बुढ़िया बोली —
तुम मुझे नहीं खा सकते ।
यह कहकर बुढ़िया ने बालू
की एक मुठ्ठी शेर की
आंखों में फेंकी ।

शेर आंखें मलता रह गया ।
बुढ़िया ने डंडे से मटके को इशारा किया ।
और बोली —
चल मेरे मटके टम्मकूटम् ।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम ।
मटका फौरन चल पड़ा ।





चलते-चलते वह जंगल के दूसरे सिरे
पर पहुँचा ।
एक झाड़ी में से एक भेड़िया निकला ।
वह बोला —
बुढ़िया बुढ़िया कहाँ चली ।
बुढ़िया बोली—
‘अपने घर जा रही हूँ।’

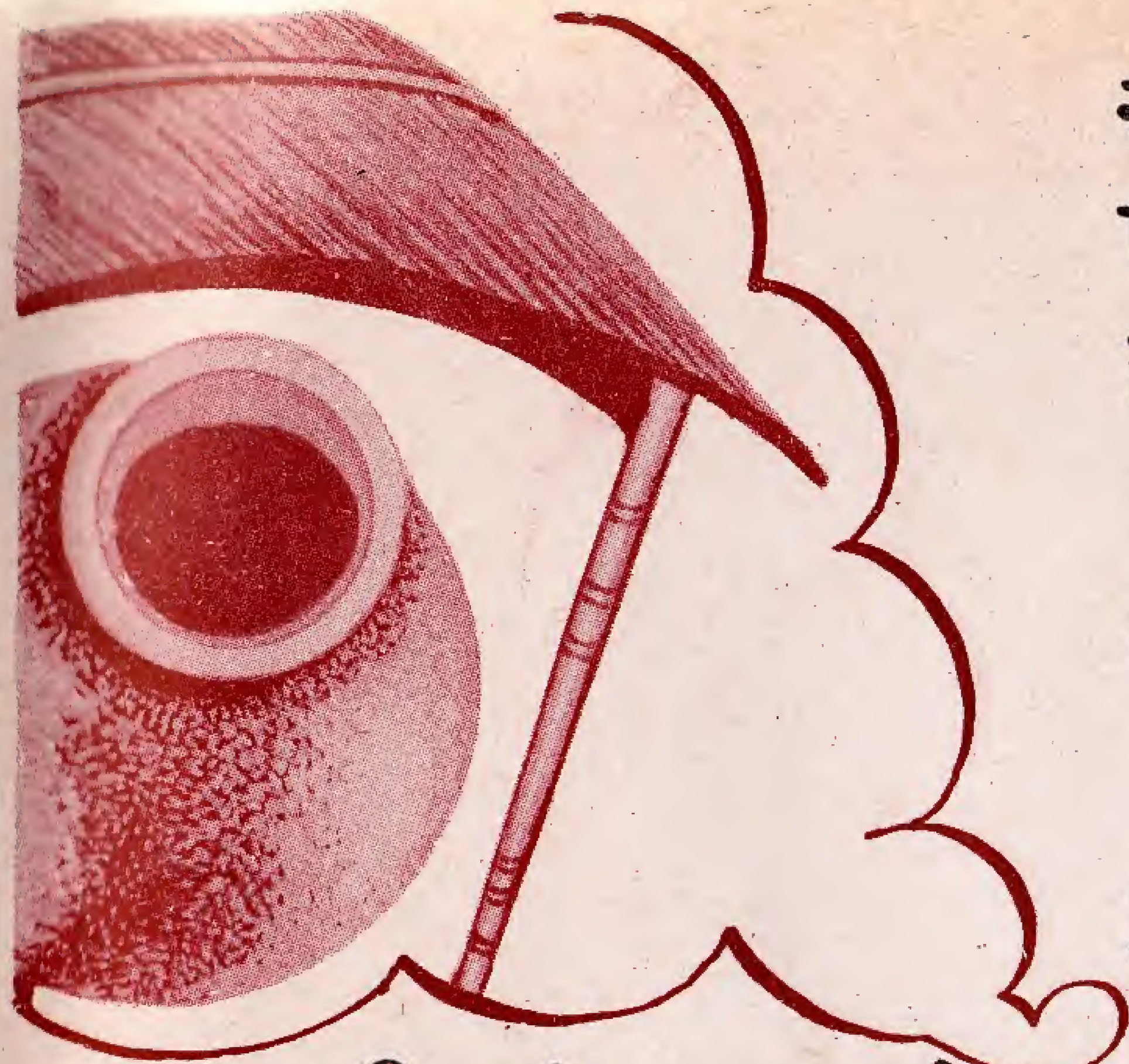
भेड़िया बोला —
मैं भूखा हूँ ।
मैं तुम्हें खाऊँगा ।
बुढ़िया बोली—
तुम मुझे नहीं खा सकते ।



यह कह कर बुढ़िया ने
भेड़िया की आंखों में
एक मुठ्ठी बालू फेंकी
भेड़िया आंखें मलता रह गया ।

बुढ़िया ने मटके को इशारा किया ।
और बोली —
चल मेरे मटके टम्मकुटम् ।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम ।
यह सुनते ही मटका चल पड़ा ।





चलते चलते मटके ने जंगल पार किया।
पहाड़ पार किया ।

शाम होते होते मटका बुढ़िया के
घर पहुँचा ।

बुढ़िया ने मटके को अपने घर में
रख दिया ।

अपना डंडा घर के कोने में रख दिया।

जब कहीं उसे जाना होता ।
डंडा अपने हाथ में लेती



और जादूके मटके से कहती



चल मेरे मटके टम्मक् टम्म ।
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम ।